अध्याय 5

वाक्य विचार

शब्दन का क्रमबद्ध सार्थक समूह के वाक्य कहल जाला। जइसे- सुनयना पोथी बाँच तारी। लइका पानी पीअता। गाड़ी नाला में गिर गइल वगैरह।

वाक्य के अंग-उद्देश्य आ विधेय

मुख्य रूप से वाक्य के दूगो अंग होला-उद्देश्य आ विधेय।

उद्देश्य आ विधेय- वाक्य में जेकरा बारे में कुछ कहल जाव, ऊ उद्देश्य ह आ उद्देश्य का बारे में जे कुछ कहल जाव, ऊ विधेय ह। जइसे-कविता खातारी। किसन पढ़ता।

एह वाक्य में कविता आ किसन उद्देश्य बा आ 'खा तारी' आ 'पढ़ता' विधेय बा।

उद्देश्य एगो संज्ञा भा सर्वनाम हो सकेला चाहे ओकरा से संबंधित त समानाधिकरण विशेषण भी ओकरा साथे हो सकेला। ई समानाधिकरण उद्देश्य के विस्तार कहाला। जइसे- 'हमार बड़का चाचा राजनारायण सिंह आइल बाड़न'। मोहन के भाई श्याम वर्मा पुलिस में रहस। एह वाक्य में 'हमार बड़का चाचा' 'राजनारायण सिंह' आ 'मोहन के भाई' उद्देश्य बा 'श्याम वर्मा' के विस्तार भा समानाधिकरण बा।

विधेय में कम-से-कम एगो क्रिया-पद रहल जरूरी होला। ऊहे मुख्य विधेय होला, बाकिर विधेय का विस्तार का रूप में कर्म, क्रियाविशेषण आ आउर दोसरो संबंधित पद आ सकेला। जइसे-सुरेन्द्र बाबू अपना बाप-मातारी आ भाई-बहिन के पटना बोला लेलन। राजकुमार पाल आपन लइका के पढ़ावत बाड़न।

इहाँ मुख्य विधेय 'बोला लेलन' आ 'पढ़ावत बाड़न' के विसतार 'अपना बाप-मतारी आ भाई-बहिन' आ 'आपन लइका' बा।

अइसनो वाक्य होला जेमें उद्देश्य आ विधेय में से एगो लुप्त रहेला। जइसे-'आईं' एमें उद्देश्य 'हम' भा 'अपने' लुप्त बा। ओइसहीं-'एमें विधेय अनुक्त भा लुप्त बा, जवना के पूर्ति प्रसंगानुसार कवनो क्रिया पद से दीहल जा सकेला।

वाक्य के प्रकार

अर्थ आ रचना के अनुसार वाक्य के कई गो प्रकार होला।

अर्थ के अनुसार वाक्य के प्रकार

अर्थ के अनुसार वाक्य के आठ गो प्रकार होला-

(1) विधानार्थक वाक्य, (2) निषेधार्थक वाक्य, (3) आज्ञार्थक वाक्य, (4) विस्मयार्थक वाक्य (7) संकेतार्थक वाक्य आ (8) संदेहार्थक वाक्य।

(1) विधानार्थक वाक्य-जवना वाक्य से कवनों क्रिया के होखे

के बोध होला ओकरा के विधानार्थक वाक्य कहल जाला। जइसे-सुप्रज्ञा पढ़तारी। घोड़ा घास खाता। बस खुलता।

(2) **निषेधार्थक वाक्य**-जवना वाक्य से कवनो क्रिया के ना होखे के बोध होला ओकरा के निषेधार्थक वाक्य कहल जाला। जइसे-संजय खेलत नइखन। हमरा कलम नइखे। अशोक स्कूल ना जइहन। निवेदिता राज ना खइहन।

(3) **आज्ञार्थक वाक्य**-जवना वाक्य से कवनो क्रिया के करे भा ना करे का आदेश के बोध होला ओकरा के आज्ञार्थक वाक्य कहल जाला। जइसे-गाँव जा। घमा में मत दउड़। मन लगा के पढ़।

(4) **प्रश्नार्थक वाक्य**-जवना वाक्य से प्रश्न के बोध होला ओकरा के प्रश्नार्थक वाक्य कहल जाला। जइसे-कहाँ जातार? ई का ह? तोहर नाँव का ह? तोहर घर कहाँ बा? कहवाँ जातार?

(5) **इच्छार्थक वाक्य**-जवना वाक्य से इच्छा, कामना, सराप आदि के बोध होला ओकरा के इच्छार्थक वाक्य कहल जाला। जइसे-भगवान करस, तोहार बढ़न्ती होखे। तू अच्छा हो जा। जीअऽ, जागऽ, नीके रह।

6. **विस्मयार्थक वाक्य**-जवना वाक्य से विस्मय, अचरज आदि के बोध होखे ओकरा के विस्मयार्थक वाक्य कहल जाला। जइसे-अइसन जुलुम! हाय राम! ओह! ई का भइला! बड़ा दुःख बा! ऐं! अइसन? बारे-रे-बाप!

(7) **संकेतार्थक वाक्य**-जवन वाक्य दू भा दू से अधिका वाक्य

के मेल से बनेला ओकरा के संकेतार्थक वाक्य कहल जाला। एमें एक वाक्य का क्रिया का सम्पन्न होखे के सम्भावना दोसरा वाक्य पर निर्भर करेला। जइसे-अगर अभिषेक राज आ जइतन, त लिखे के काम पूरा हो जाइत। रउआ कहीं, त हम पटना जाईं।

(8) संदेहार्थक वाक्य-जवना वाक्य से क्रिया का होले में संदेह के बोध होला ओकरा के संदेहार्थक वाक्य कहल जाला। जइसे-मास्टर साहेब आवत ना होखस। इस्कूल साइद विहान से खुली। लइका खेलत ना होखस।

रचना के अनुसार वाक्य के प्रकार

रचना के अनुसार वाक्य **तीन** प्रकार के होला-**(1) सरल वाक्य (2) मिश्र वाक्य आ (3) संयुक्त वाक्य।**

(1) सरल वाक्य-जवना वाक्य में एगो उद्देश्य आ एगो विधेय होला ओकरा के सरल वाक्य कहल जाला। जइसे-लरिका पढ़ता। मोहन घरे जइहन। हम पढ़तानी। नितेश खातारन।

(2) मिश्र वाक्य-जवना वाक्य में एगो सरल वाक्य का अलावे ओकरा उद्देश्य चाहे विधेय पर आश्रित एगो या एगो से ज्यादा उपवाक्य होला ओकरा के मिश्र वाक्य कहल जाला। मिश्र वाक्य के उपवाक्य मुख्य उपवाक्य का साथ व्याधिकरण समुच्चय से जुड़ल रहेला।

उपवाक्य

उपवाक्य तीन तरह के होला- संज्ञा उपवाक्य, विशेषण उपवाक्य,

आ क्रियाविशेषज्ञण उपवाक्य। विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव अपना किताब ''भोजपुरी व्याकरण के रूपरेखा' में उपवाक्य के प्रकार का बारे में आपन विचार एह तरह से दीहले बाड़न-

संज्ञा उपवाक्य-ई वाक्य में संज्ञा के काम करेला आ मुख्य उपवाक्य से 'कि, जे' संयोजक से जुड़ल रहेला जइसे-

कर्त्ता का रूप में -'बान्ह कइसे टूट गइल' आश्चर्य बा।

कर्म का रूप में-हमरा मालूम रहे कि 'तू ना अइब'।

समानाधिकरण का रूप में-'ई बात कि रमेश गारी देलन' गलत बा।

पहिला वाक्य में 'बा' क्रिया के कर्त्ता 'बान्ह कइसे टूट गइल', दूसरा वाक्य में 'मालूम रहे क्रिया के कर्म तू ना अइब आ तीसरा वाक्य में 'ई बात' संज्ञा के समानधिकरण 'रमेश गारी देलन' संज्ञा उपवाक्य बा।

विशेषण उपवाक्य-ई वाक्य में विशेषण के काम करेला। ई 'जे' आ 'जवन' संयोजक से जुड़ल रहेला। मुख्य उपवाक्य का साथे एकर सहचर संयोजक से, तवन, हओ के, ओकरा, तवना के आदि से भी जुड़ सकेला। विशेषण उपवाक्य वाक्य में मुख्य उपवाक्य का पहिलहूँ आ सकेला आ बादो में। ई मुख्य उपवाक्य का कर्त्ता भा कर्म के विशेषता देखावेला आ समानधिकरणों बन के आवेला। जइसे- कर्त्ता से - ऊ पौधा, जवन हम रोपले रहीं, सूख गइल।

कर्म से- ऊ एगो बात कहलन जवन सबका बेजाँय लागल।

समानाधिकरण से-रउरा जे चिट्ठी भेजनी, ओ से बड़ा सहारा मिलल।

कहीं-कहीं विशेषण उपवाक्य के संयोजक लुप्तो रहेला। जइसे-जइसन अपने के मर्जी होए (ओइसने हमनीं भा कोई करी) क्रियाविशेषणों का शब्द में कहीं-कहीं विशेषण उपवाक्य छिपल रहेला। जइसे-ई ऊ दिआर (क्षेत्र) ह, जहवाँ कउआ भात ना पूछे। (जहवाँ-जवना क्षेत्र में)।

क्रियाविशेषण उपवाक्य- ई वाक्य में क्रियाविशेषण जइसन काम करेला इहो उपवाक्य मुख्य उपवाक्य का पहिले भा पाछे आ सकेला। ई वाक्य में नीचे लिखल तरह से आवेला। एमें आश्रित उपवाक्य का पहिले 'जब, जइसे, अतना, काहेकि, अगर, जो, जहाँ, जहाँ से, जहाँ ले, जहाँ तक, अरगचे आ मुख्य उपवाक्य का साथ 'तब, ओइसे, ओतना, तौभी, ताहम, उहाँ, उठाँ तक वैरह संयोजक आ सहचर-संयोजक आवेला।

कालवाचक-अब हल्ला भइल, तब लोग दउड़ल।

जब ले ऊ आवस ना, तूँ एतहीं बइठल रहिहऽ।

स्थानवाचक-जहाँ काम मिले, उहाँ जाए के पड़ी।

जेने से आइल, ओने लौट गइल।

रीतिवाचक-जइसे फरिआय, ओइसे बात करिहऽ।

हम ओह लेखा ना बोलब, जे लेखा तूँ बोलेलऽ।

परिणामवाचक-जेतने अपरेशन के दिन नजदिकाता, ओतने ओकर करेज काँपता। जेतना चल सके, उठा ले जा।

कार्यकारणवाचक-हम उनका के ना भुला सकीं, काहेकि उनके चलते हमरा ई दिन देखे के पड़ल। अइसन एसे कह देनी, ताकि उनका मन में शंका ना रह जाय।

विरोधसूचक-ऊ गरीब बा, तबो हमार मदत करी। ऊ भले ही ना बर बा, बाकिर जबान के पक्का बा।

संकेतवाचक-ऊ खूब मेहनत करेलन, ताकि नीरोग रहस।

ब्याधिकरण समुच्चय के प्राय: सब संयोजक का साथ क्रियाविशेषण उपवाक्य के उदाहरण बन सकेला। कहीं कहीं मुख्य उपवाक्य भा आश्रित उपवाक्य में कुछ पद लुप्तो रहेला, जइसे-जहाँ मन करे जा। बइठ चाहे जा। या त तूहीं, ना त हमही इहाँ बइठब।

(3) संयुक्त वाक्य-जवना वाक्य में एक से जादे सरल भा मिश्र वाक्य आश्रित उपवाक्य का साथे चाहे अकेले समानाधिकरण समुच्चय से जुड़ल होला, ऊ संयुक्त वाक्य कहाला। संयुक्त वाक्य चार तरह से समानाधिकरण समुच्चय से जुड़ेला-(क) संयोजक (ख) विभाजक (ग) विरोधदर्शक (घ) परिणाम-सूचक

(क) संयोजक-एह काम से पइसा त मिलबे करी, समाज के सेवो होई। राम खाली इंजीनियरे नइखन, बलुक महाभारत के जानकारो बाड़न।

(ख) विभाजक-आज खेल में या त जय चाहे छय होई। या त पढ़े बइठऽ, ना त खेले जा।

(ग) विरोध-दर्शक-हम मोहन के लाख समझवनी, बाकिर ऊ हमार एक ना मनलें। लोग के मदत करीं, बाकिर तरफदारी मत करीं।

(घ) परिणाम-सूचक-अगर रउरा कहीं त, हमहूँ साथे चलीं। राम हमार बात ना मनलन, एह से उनका ई दिन देखे के पड़ल।

वाक्य के रूपान्तर

एक तरह का वाक्य के बिना अर्थ बदलले, दोसर तरह का वाक्य में बदल देवे के प्रक्रिया के रूपान्तर कहल जाला।

सरल वाक्य से मिश्र वाक्य

सरल वाक्य-शर्मा जी अपना हिस्सा के खेत बेच दीहलन।

मिश्र वाक्य-शर्मा जी ऊ खेत बेच दीहले, जवन उनका हिस्सा के रहे।

सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य

सरल वाक्य-बेमार भइला का चलते ऊ बारात मे ना अइलन।

संयुक्त वाक्य-ऊ बेमार रहस, एह से बारात में ना अइलन।

मिश्र वाक्य से सरल वाक्य

मिश्र वाक्य-जे ईमानदार होला, ओकर सभ इज्जत करेला।

सरल वाक्य-ईमादार के सभे इज्जत करेला।

संयुक्त वाक्य से सरल वाक्य

संयुक्त वाक्य- धनो गइल आ धरमो गइल।

सरल वाक्य-धन, धरम दूनू गइल।

कर्त्तृवाच्य से कर्म वाच्य

कर्त्तृवाच्य- हम पढ़तानी।

कर्मवाच्य- हमरा से पढ़ाता।

विधिवाचक से निषेधवाचक

विधिवाचक- हम दिल्ली जरूर जाएब।

प्रश्नवाचक- हम दिल्ली काहे ना जाएब?

प्रश्नवाचक से विधिवाचक

प्रश्नवाचक- रउरा अइसन हिम्मती आदमी कहाँ मिली?

विधिवाचक- रउरा अइसन हिम्मती आदमी कतहीं ना मिली।

बोध प्रश्न

1. वाक्य के परिभाषा देत ओकर प्रकार के बारे में बताई।

2. वाक्य के अंग सब के परिभाषा बताईं।

3. रचना के अनुसार वाक्य के कय गो प्रकार बतावल गइल बा।